उद्योग साझेदारी से टिकाऊ स्टार्टअप बनेंगे मजबूत

स्टार्टअप की दीर्घकालिक सफलता उद्योग सहयोग पर निर्भर

नई दिल्ली, 7 सितंबर. केंद्रीय मंत्री जितेंद्र सिंह ने कहा है कि भारत के भविष्य की विकास दर मजबूत उद्योग साझेदारी पर आधारित 'स्टार्टअप-लिंक्ड इकोनॉमी' के निर्माण पर निर्भर करेगी. चंडीगढ़ यूनिवर्सिटी द्वारा 'कैंपस टैंक' के शुभारंभ के अवसर पर बोलते हुए, उन्होंने कहा कि सरकार ने नवाचार और उद्यमिता के लिए एक सक्षम पारिस्थितिकी तंत्र बनाया है, लेकिन स्टार्टअप को बनाए रखने के लिए उद्योग के साथ शुरुआती और ठोस जुड़ाव की आवश्यकता है.

सिंह ने जोर दिया कि विचारों और शोध की उत्पत्ति भले ही कैंपस से होती हो, लेकिन उनकी दीर्घकालिक सफलता वित्तीय सहायता, बाजार तक पहुंच और विस्तार के लिए उद्योग के साथ संरचित साझेदारी पर निर्भर करती है. उन्होंने कहा कि भारत की स्टार्टअप कहानी अब तक ऊर्जा और नवाचार पर आधारित रही है, लेकिन अगले चरण में टिकाऊ उद्यमों के निर्माण पर ध्यान केंद्रित करना होगा जो प्रतिस्पर्धी बाजारों में टिक सकें.

मंत्री ने जैव प्रौद्योगिकी, कृषि और अंतरिक्ष जैसे क्षेत्रों से उदाहरण दिए, जहां सरकारी समर्थन और उद्योग सहयोग ने पहले ही उल्लेखनीय परिणाम दिए हैं. उन्होंने कहा कि उद्योग की भागीदारी न केवल स्टार्टअप को मजबूत करती है, बल्कि यह भी सुनिश्चित करती है कि निवेश उत्पादक हो और रोजगार के अवसर पैदा करे.

> उन्होंने यह भी बताया कि भारत का स्टार्टअप पारिस्थितिकी तंत्र अब केवल महानगरों या प्रौद्योगिकी केंद्रों तक सीमित नहीं है, क्योंकि छोटे शहर और विविध क्षेत्र भी नए उद्यमों में योगदान दे रहे हैं. यह एक आकांक्षी भारत का संकेत है जो विकास के लिए नवाचार का उपयोग करने के लिए तैयार है. सिंह ने वैश्विक नवाचार सूचकांक में भारत की बढ़ती स्थिति पर भी प्रकाश डाला. उन्होंने बताया कि एक दशक से भी कम समय में भारत 81वें स्थान से 39वें स्थान पर पहुँच गया है.

सेंसेक्स-निफ्टी में साप्ताहिक तेजी

मिडकैप और स्मॉलकैप ने दिखाई मजबूती

सेंसेक्स 901 अंक चढ़कर 80,710 पर

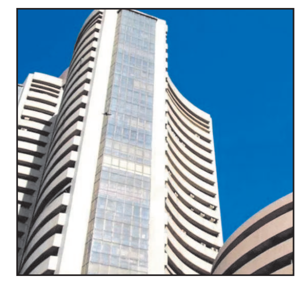

मुंबई, 7 सितंबर. बीते सप्ताह घरेलू शेयर बाजारों में अच्छी तेजी देखने के बाद आने वाले सप्ताह में बाजार की चाल निवेशकों की नजर जीएसटी सुधारों के जमीनी असर और वैश्विक संकेतों पर टिकी रहेगी. जीएसटी परिषद द्वारा आम लोगों के उपयोग की वस्तुओं पर कर घटाने की घोषणा के बाद वाहन निर्माताओं ने कीमतों में कटौती करना शुरू कर दिया है, जिससे विभिन्न क्षेत्रों में निवेश की दिशा तय हो सकती है.

पिछले सप्ताह, दोनों प्रमुख सूचकांकों में एक प्रतिशत से अधिक की बढ़त दर्ज की गई. बीएसई का 30 शेयरों वाला संवेदी सूचकांक सेंसेक्स 901.11 अंक की साप्ताहिक बढ़त के साथ 80,710.76 अंक पर बंद हुआ. वहीं, नेशनल स्टॉक एक्सचेंज का निफ्टी-50 सूचकांक 314.15 अंक चढ़कर 24,741 अंक के स्तर पर पहुंच गया.

बाजार पूंजीकरण में वृद्धि

पिछले सप्ताह बीएसई की शीर्ष 10 में से सात कंपनियों का कुल बाजार पूंजीकरण रु. 1,06,251 करोड़ बढ़ गया. बजाज फाइनेंस का बाजार पूंजीकरण सबसे ज्यादा रु. 37,961 करोड़ बढ़ा, जबकि रिलायंस इंडस्ट्रीज और एचडीएफसी बैंक के एम-कैप में भी उल्लेखनीय वृद्धि देखी गई. हालांकि, टीसीएस, इंफोसिस और हिंदुस्तान यूनिलीवर के एम-कैप में क्रमशः रु. 13,007 करोड़, रु. 10,427 करोड़ और ?6,297 करोड़ की गिरावट दर्ज की गई.

गेस्ट कॉलम: तैयारी, रिश्ते और सही सोच से बदलाव होगा आसान

किसी भी व्यक्ति के लिए नई नौकरी की शुरुआत रोमांच और उत्साह के साथ-साथ चिंता और तनाव भी ला सकती है. भले ही कोई कितना भी अनुभवी पेशेवर हो, नए माहौल में तालमेल बिठाने और खुद को साबित करने का दबाव महसूस करना स्वाभाविक है. श्रीराम जनरल इंश्योरेंस कंपनी लिमिटेड के एचआर हेड अरुण कुमार सिंह के अनुसार, इस बदलाव को प्रभावी ढंग से प्रबंधित करके ही सफलता हासिल की जा सकती है.सिंह ने बताया कि नई नौकरी की चिंता होना सामान्य है और इसे दबाने के बजाय स्वीकार करना चाहिए. वे कहते हैं कि इस घबराहट को उत्साह में बदल देना चाहिए, क्योंकि शरीर दोनों भावनाओं पर समान प्रतिक्रिया देता है. इस तरह, मैं घबरा रहा हूँ की बजाय मैं इस अवसर के लिए उत्साहित हूँ कहना एक सकारात्मक बदलाव ला सकता है.

अरुण कुमार सिंह, हेड - एचआर, श्रीराम जनरल इंश्योरेंस कंपनी लिमिटेड

तैयारी ही कुंजी है

नई नौकरी के तनाव को कम करने का सबसे अच्छा तरीका पहले से तैयारी करना है. यह आत्मविश्वास बढ़ा सकता है.

कंपनी पर शोध-कंपनी के मूल्यों, मिशन और बिजनेस मॉडल को समझें.

जिम्मेदारियों की समीक्षा- अपनी भूमिका और अपेक्षाओं को स्पष्ट करने के लिए नौकरी विवरण को दोबारा पढ़ें.

आवागमन की योजना-पहले दिन देर से पहुँचने से बचने के लिए यात्रा के मार्ग और समय का अनुमान लगाएँ.

सही पोशाक का चयन-कंपनी की संस्कृति के अनुरूप पेशेवर कपड़े पहनें.

अपेक्षाओं का प्रबंधन और संबंध बनाना- कई पेशेवर पहले दिन से ही परफेक्ट होने का दबाव महसूस करते हैं, लेकिन यह समझना महत्वपूर्ण है कि कोई भी तुरंत सब कुछ नहीं सीख सकता. इस दौरान सीखने की प्रक्रिया पर ध्यान देना चाहिए-

ध्यान से सुनें-कंपनी की कार्यप्रणाली और संस्कृति को समझें.

सही सवाल पूछें- संदेहों को दूर करने के लिए समझदारी भरे प्रश्न पूछें.

धीरे-धीरे आगे बढ़ें-अपनी ऑनबोर्डिंग यात्रा को छोटे-छोटे कार्यों में बाँटें.

इसके अतिरिक्त, नए सहकर्मियों के साथ संबंध बनाना भी महत्वपूर्ण है. बातचीत की पहल करें, कार्यालय की संस्कृति को समझें, और अनौपचारिक बातचीत में हिस्सा लें ताकि माहौल सहज हो सके.

(यह लेखक के निजी विचार हैं.)

दिनचर्या और स्वयं की देखभाल

- शुरुआती दिन मानसिक रूप से थका देने वाले हो सकते हैं, इसलिए स्वयं की देखभाल को प्राथमिकता देना आवश्यक है.
- **नियमित दिनचर्या**- सुबह की दिनचर्या में व्यायाम, ध्यान या पढ़ने को शामिल करें.
- **छोटे ब्रेक लें**- थकान से बचने और ध्यान केंद्रित करने के लिए दिन भर में छोटे-छोटे ब्रेक लें.
- **कार्य-जीवन संतुलन**- खुद को साबित करने के लिए ज़्यादा काम करने से बचें.
- गलतियाँ सीखने की प्रक्रिया का हिस्सा हैं. सिंह ने सलाह दी कि एक विकास की मानसिकता अपनानी चाहिए, जहाँ चुनौतियों को सीखने के अवसर के रूप में देखा जाए. यदि ज़रूरत पड़े, तो किसी सलाहकार या एचआर विभाग से मदद लेने में संकोच न करें. नई नौकरी की चिंता एक आम अनुभव है, जिसे सही रणनीति और दृष्टिकोण से आसानी से दूर किया जा सकता है.

मेटा बनाएगा हिंदी एआई चैटबॉट्स

नई दिल्ली. 7 सितंबर. मेटा भारत जैसे तेजी से बढ़ते बाजारों के लिए हिंदी में एआई चैटबॉट्स बनाने की दिशा में काम कर रहा है, जिसके लिए कंपनी कथित तौर पर अमेरिका में 55 डॉलर (लगभग 4,850 रुपये) प्रति घंटे की दर से कॉन्ट्रैक्टर्स की भर्ती कर रही है. यह जानकारी एक रिपोर्ट में सामने आई है. बिजनेस इनसाइडर की रिपोर्ट के अनुसार, मेटा भारत, इंडोनेशिया और मैक्सिको में अपनी एआई मौजूदगी का विस्तार करने की बड़ी योजना के हिस्से के रूप में इन भूमिकाओं के लिए हायरिंग कर रहा है. नौकरी की लिस्टिंग से पता चलता है कि यह भर्ती क्रिस्टल इक्वेशन और एक्वेंट टैलेंट जैसी स्टाफिंग फर्मों के जरिए की जा रही है.

भारत का विदेशी मुद्रा भंडार 694 .2 अरब डॉलर पर

एक सप्ताह में 3 .5 अरब डॉलर की बढ़ोतरी

सोने का भंडार 1 .8 अरब डॉलर बढ़कर 86 .76 अरब डॉलर तक पहुँचा

नई दिल्ली, 7 सितंबर. भारतीय रिजर्व बैंक (आरबीआई) के नवीनतम आंकड़ों के अनुसार, 29 अगस्त को समाप्त हुए सप्ताह में भारत का विदेशी मुद्रा भंडार 3.5 अरब डॉलर बढ़कर 694.2 अरब डॉलर हो गया है. यह बढ़ोतरी मुख्य रूप से विदेशी मुद्रा परिसंपत्तियों और सोने के भंडार में हुई वृद्धि के कारण हुई.

आरबीआई के साप्ताहिक सांख्यिकीय पूरक के अनुसार, देश का विदेशी मुद्रा भंडार अब सितंबर 2024 के अपने सर्वकालिक उच्च स्तर 704.89 अरब डॉलर के करीब पहुँच गया है. रिपोर्ट किए गए सप्ताह में, विदेशी मुद्रा परिसंपत्तियां (स्वष्ट), जो भंडार का सबसे बड़ा हिस्सा हैं, 1.7 अरब डॉलर बढ़कर 583.93 अरब डॉलर हो गई, जबकि सोने का भंडार 1.8 अरब डॉलर बढ़कर 86.76 अरब डॉलर तक पहुँच गया.

आरबीआई गवर्नर संजय मल्होत्रा ने हाल ही में कहा था कि देश का विदेशी मुद्रा भंडार 11 महीने के आयात को कवर करने के लिए पर्याप्त है. आंकड़ों के मुताबिक, 2023 में भारत ने अपने विदेशी मुद्रा भंडार में लगभग 58 अरब डॉलर जोड़े थे, जबकि 2022 में इसमें 71 अरब डॉलर की गिरावट आई थी. 2024 में यह भंडार 20 अरब डॉलर से अधिक बढ़ा, जबकि 2025 में अब तक इसमें कुल 53 अरब डॉलर की वृद्धि हुई है.

रुपया 88 .09 पर स्थिर, दबाव बरकरार

मुंबई . बीते सप्ताह उतार-चढ़ाव के बावजूद भारतीय रुपया शुक्रवार को सप्ताह के अंतिम कारोबारी दिवस पर 88 .0925 रुपये प्रति डॉलर पर लगभग स्थिर बंद हुआ. भारतीय मुद्रा एक सप्ताह पहले 88 .09 रुपये प्रति डॉलर पर रही थी. समीक्षाधीन सप्ताह में रुपया 88 .38 रुपये प्रति डॉलर के ऐतिहासिक निचले स्तर तक कमजोर हुआ था, जो शुक्रवार को ही दर्ज किया गया था. विदेशी संस्थागत निवेशकों की लगातार पूंजी निकासी से रुपये पर दबाव बना हुआ है.

कंपनी ऑरैवल का नाम बदला

अब प्रिज्म लाइफ बनेगी नई पहचान

नई दिल्ली, 7 सितंबर. आईपीओ की तैयारी कर रही वैश्विक यात्रा प्रौद्योगिकी मंच ओयो की मूल कंपनी ऑरैवल स्टेज ने अपना नाम बदलकर प्रिज्म कर दिया है. यह नया नाम कंपनी के सभी विविध व्यवसायों के लिए एक प्रमुख इकाई के रूप में काम करेगा और उसके विभिन्न ब्रांडों को एक साथ लाएगा.

संस्थापक और बोर्ड के चेयरमैन रितेश अग्रवाल ने शेयरधारकों को भेजे एक पत्र में कहा कि ऑरैवल स्टेज अब 'प्रिज्म लाइफ' के नाम से जानी जाएगी, जिसे संक्षेप में 'प्रिज्म' कहा जाएगा. अग्रवाल ने बताया कि यह नई पहचान कंपनी को अधिक कुशलता से काम करने और अपनी पहचान को स्पष्ट रूप से दर्शाने में मदद करेगी.

अग्रवाल के अनुसार, ओयो ब्रांड बजट और मध्यम-श्रेणी की यात्राओं के लिए काम करता रहेगा, जबकि प्रिज्म एक मूल ब्रांड की भूमिका निभाएगा. प्रिज्म के तहत प्रीमियम हॉस्पिटैलिटी, लग्जरी गेटवे, उत्सव स्थल और अनुभवात्मक जीवन अवधारणाएं जैसे विविध व्यवसाय शामिल होंगे.

थोक जिंस बाजार में मंदी, दाल-चावल सस्ते

खाद्य तेलों में मिला-जुला रुख, चीनी-गुड़ में गिरावट जारी

चना, उड़द, मूंग, तुअर और मसूर दाल के भाव घटे

नयी दिल्ली- बीते सप्ताह घरेलू थोक जिंस बाजारों में मंदी का रुख देखने को मिला, जिससे चावल, गेहूं, दालों और चीनी जैसी प्रमुख वस्तुओं की कीमतें नरम रहीं. खाद्य तेलों के बाजार में मिली-जुली प्रतिक्रिया रही.

सप्ताहांत पर, चावल की औसत कीमत रु.3,776.83 प्रति क्विंटल पर आ गई, जबकि गेहूं भी लगभग रु.7 सस्ता होकर रु.2,848.96 प्रति क्विंटल पर बिका. आटे की कीमत लगभग स्थिर रही और यह रु.3,312.11 प्रति क्विंटल पर बंद हुआ.

खाद्य तेलों में घटबढ़ का रुख रहा. सरसों तेल की औसत कीमत में रु.63 प्रति क्विंटल की बढ़ोतरी हुई. वहीं, मूंगफली तेल रु.147, वनस्पति रु.151, सोयाबीन तेल रु.44, सूरजमुखी तेल रु.62 और पाम ऑयल रु.47 प्रति क्विंटल सस्ता हुआ. दाल-दलहनों में भी साप्ताहिक नरमी देखी गई. चना दाल औसतन रु.67, उड़द दाल रु.30, मूंग दाल रु.52, तुअर दाल रु.113 और मसूर दाल रु.17 प्रति क्विंटल सस्ती हुई.

प्रमुख जिंसों के औसत थोक भाव

- **दाल-दलहन**- दाल चना रु.7,893.92; मसूर काली रु.8,092.38; मूंग दाल रु. 10,051.69; उड़द दाल रु.10,404.63; अरहर दाल रु.10,560.87 प्रति क्विंटल.
- **अनाज**- गेहूं दड़ा रु.2,848.96; चावल रु.3,776.83 प्रति क्विंटल.
- **चीनी-गुड़**- चीनी एस रु.4,299.87; गुड़ रु.4,926.68 प्रति क्विंटल.

समाचार विशेष

लालू-राबड़ी काल में भी नहीं टूटा भाजपा का ये गढ़

गया टाउन सीट पर 35 साल से एक ही नेता का कब्जा

गया. बिहार के गया टाउन विधानसभा सीट पर पिछले 35 सालों से भाजपा का कब्जा है. 2025 के विधानसभा चुनाव में महागठबंधन के सामने इस गढ़ को तोड़ने की चुनौती है. हालांकि पिछले 3 चुनाव से भाजपा के वोट प्रतिशत में गिरावट देखी गई है. बावजूद इसके बीजेपी के इस तिलस्म को तोड़ने में महागठबंधन नाकाम रहा है. लालू और राबड़ी काल में भी बीजेपी का ये किला अभेद्य रहा है.

बिहार में चुनाव आते ही गयाजी की चर्चा शुरू हो जाती है. दशकों से भाजपा का गढ़ होने के कारण यह सीट सुर्खियों में रहती है. पिछले 35 सालों से भाजपा के डॉ प्रेम कुमार इस सीट पर काबिज हैं. कई बार एंटी इनकंबेंसी लहर रही लेकिन भाजपा का तिलिस्म नहीं टूटा. गया जिले में कुल 10 विधानसभा सीटें हैं, जिनमें गयाजी नगर भाजपा का गढ़ है. 35 सालों से भाजपा यहां हारी नहीं है. डॉ. प्रेम कुमार लगातार 1990 से विधायक हैं.

विपक्ष ने कई चेहरे बदले लेकिन सफलता नहीं मिली. 2015 में जेडीयू ने महागठबंधन के साथ मिलकर चुनाव लड़ा था. नीतीश कुमार ने कांग्रेस प्रत्याशी के पक्ष में प्रचार भी किया, लेकिन भाजपा को हराने में नाकाम रहे. वर्तमान में प्रेम कुमार नीतीश सरकार में सहकारिता मंत्री हैं. भाजपा ने उन पर हमेशा भरोसा जताया है.

कांग्रेस का दौर और मंडल की लहर - गया टाउन सीट 1952 से अस्तित्व में है. 1952 से 1985 तक कांग्रेस का दबदबा रहा लेकिन 1990 में मंडल लहर के बाद पहली बार डॉ. प्रेम कुमार ने जीत दर्ज की और तब से अब तक लगातार काबिज हैं. प्रेम कुमार का जातीय आधार मजबूत है. वह चंद्रवंशी समाज से आते हैं जिसकी संख्या 50 हजार के करीब है. इसके अलावा वैश्य समाज के 25 हजार वोट और भाजपा के कोर वोटर भी उनके साथ हैं. यही समीकरण उन्हें जीत दिलाता है.

गयाजी का चुनावी इतिहास

देश की आजादी के बाद पहली बार कांग्रेस के टिकट पर केशव प्रसाद 1952 में विधायक बने थे. साल 1957 में कांग्रेस की टिकट पर सरदार मोहन विधायक चुने गए. जबकि साल 1962 में निर्दलीय श्याम भारतवार विधायक बने थे. 1967 और 1969 के चुनाव में गोपाल मिश्रा जनसंघ की टिकट पर विधायक बने, जबकि 1972 में युगल किशोर प्रसाद कांग्रेस के टिकट पर जीते थे. 1977 में सुशीला सहाय जनता पार्टी की टिकट पर विधायक बनी थीं, वहीं 1980 और 1985 में जयकुमार पालित विधायक बने, फिर इसके बाद भाजपा के प्रेम कुमार का दौर 1990 से जो शुरू हुआ वह 2025 तक जारी है. गयाजी में अल्पसंख्यक समाज के करीब 60 हजार वोट हैं. वैश्य समाज के 50 से 55 हजार वोट हैं. कायस्थ और चंद्रवंशी समाज के 25-25 हजार वोट हैं.

भाजपा के सियासी भंवर जाल में हिचकोले खाती कांग्रेस

रायपुर. छत्तीसगढ़ में कांग्रेस पार्टी भारतीय जनता पार्टी के राजनीतिक भंवर जाल में फंस गई है. कांग्रेस के बड़े नेता कांग्रेस को राज्य में सुधारने के लिए जिस तरह की राजनीतिक नसीहत अपनी पार्टी और पार्टी को चलाने की गतिविधियों को लेकर दे रहे हैं भाजपा उस विभेद के राजनीति के फायदे का बड़ा आधार खड़ा कर रही है.

सबसे बड़ी बात यह है खुद कांग्रेस के कुछ नेता इस बात को मान रहे हैं कांग्रेस को बेहतर तरीके से चलाने के लिए राज्य में कमान बदलनी चाहिए, लेकिन ऐसे नेताओं की बात या तो उनकी निजी राय हो जा रही है या फिर कांग्रेस के भीतर गुटबाजी. बड़ी बात यह है कि गुटबाजी वाला यह समीकरण पार्टी के भीतर ही सवाल और जवाब बन रहा है. पार्टी के भीतर का यह विभेद भाजपा का राजनीतिक दांव पेंच का जाल बन रहा है.

2023 वाली सियासत में छत्तीसगढ़ में सत्ता वापसी की दावेदारी भूपेश बघेल के आधार पर ही खड़ी हुई थी. कांग्रेस नेता 2023 में हार की वजह कांग्रेस की गुटबाजी को बताते हैं. एकजुट होकर कांग्रेस पार्टी चुनाव लड़ी ही नहीं. हालांकि कांग्रेस के भीतर सरगुजा और दुर्ग संभाग के विभेद वाली राजनीति की खाई पटी ही नहीं और नुकसान पार्टी का हो गया. सरगुजा और दुर्ग के विभेद वाली राजनीति का अध्याय खत्म ही नहीं हुआ. दुर्ग और सरगुजा संभाग के जिस विभेद का नुकसान कांग्रेस को हुआ था भाजपा ने इसके लिए सटीक रणनीति बना ली और उसी के आधार पर काम भी कर दिया.

बीजेपी की गोलबंदी

कहते हैं दिल्ली में सरकार बनाने के लिए जो रास्ता है वह बिहार और उत्तर प्रदेश से होकर जाता है. हालांकि अभी कांग्रेस की आलाकमान वाली इकाई बिहार में ही सरकार बनाने की लडाई लड़ रही है. इधर कांग्रेस के आंतरिक समीक्षा में यह बात आ रही है कि छत्तीसगढ़ में सरकार बनाने का रास्ता सरगुजा से होकर जाता है. राजनीति में एक नई कहानी विष्णु देव मंत्रिमंडल में देख लिया जाए तो यह कहा जा सकता है कि छत्तीसगढ़ में मजबूत सरकार बनाने का रास्ता सरगुजा संभाग से आया है. छत्तीसगढ़ में चल रही बीजेपी की सरकार में सरगुजा संभाग में अकेले 5 मंत्री हैं. मुख्यमंत्री भी सरगुजा संभाग से ही आते हैं.

विशेष: नेताओं के लटके हैं चेहरे, कहीं टूट न जाए टिकट की आस

बिहार में गठबंधन की मजबूरी

बांका. बिहार विधानसभा चुनाव 2025 को लेकर जिले में राजनीतिक हलचल तेज हो गई है. पिछले चुनाव में किस्मत आज़माने वाले कई चेहरे इस बार भी टिकट की आस लगाए बैठे थे, लेकिन गठबंधन की मजबूरी के कारण उनकी स्थिति असमंजस में है. बांका की राजनीति में छह से अधिक नेताओं की दावेदारी चर्चा का विषय बनी हुई है. सवाल यही है कि इन नेताओं का अगला कदम क्या होगा.

जिले में कुल पांच विधानसभा क्षेत्र हैं. इनमें दो पर जदयू, दो पर भाजपा और एक पर राजद का कब्जा है. अमरपुर सीट से भवन निर्माण मंत्री जयंत राज जदयू के संभावित प्रत्याशी हैं. उनके खिलाफ पिछले चुनाव में लोजपा से डा. मृणाल शेखर मैदान में उतरे थे और उन्हें 40 हजार वोट मिले थे. बाद में वे भाजपा में शामिल हो गए. इसी तरह पूर्व मंत्री सुरेंद्र कुशवाहा भी पिछली बार निर्दलीय लड़े थे और अब भाजपा में हैं. ऐसे में दोनों नेताओं की भूमिका पर निगाहें टिकी हैं.

बेलहर सीट पर भी समीकरण दिलचस्प हैं. यहां जदयू विधायक मनोज यादव फिर उम्मीदवार हो सकते हैं, लेकिन भाजपा में शामिल हुए पूर्व विधायक राजकिशोर उर्फ पप्पू यादव इस सीट से भाजपा टिकट के प्रबल दावेदार हैं. उन्होंने हाल ही में हस्ताक्षर अभियान चलाकर 46 हजार लोगों के समर्थन की सूची प्रदेश अध्यक्ष को सौंपने की घोषणा की है. वहीं, पूर्व राज्यसभा सदस्य जर्नादन यादव के पुत्र मनोज यादव भी भाजपा की गतिविधियों में सक्रिय हैं और उनकी संभावनाओं को नज़रअंदाज नहीं किया जा सकता. पूर्व स्वास्थ्य मंत्री सुरेंद्र कुशवाहा लंबे समय तक अमरपुर से राजद विधायक रहे हैं. 2015 में वे निर्दलीय लड़े थे और मात्र दो हजार वोट मिले थे. लोकसभा चुनाव के दौरान वे सक्रिय रहे, लेकिन जदयू के गिरिधारी यादव के मैदान में आने के बाद चुप हो गए.

राहुल का हाइड्रोजन बम क्या है?

नई दिल्ली. कांग्रेस नेता राहुल गांधी ने बिहार में वोटर अधिकार यात्रा के समापन पर सोमवार को हुई सभा में यह कह कर कर भाजपा नेताओं की नींद उड़ाई है कि वोट चोरी पर उनके पास हाइड्रोजन बम है.

भाजपा के नेता भले इस बात को खारिज कर रहे हैं और कह रहे हैं कि राहुल ने जिसको एटम बम बताया था वह भी फुस्स हो गया. बिहार में भाजपा के एक नेता ने अनौपचारिक बातचीत में कहा कि राहुल को इस तरह के जुमले बोलने की आदत है. जैसे उन्होंने एक बार संसद में कहा था कि वे बोलेंगे को भूकंप आएगा. लेकिन उनके बोलने से कुछ नहीं हुआ. गौरतलब है कि राहुल ने पिछले महीने वोट चोरी के आरोपों पर प्रेस कॉन्फ्रेंस की थी और कर्नाटक की बेंगलुरू सेंट्रल सीट के तहत आने वाली महादेवपुरा सीट पर एक लाख वोट की गड़बड़ी का आरोप लगाया था. प्रेस कॉन्फ्रेंस के तुरंत बाद चुनाव आयोग ने उनसे हलफनामा देकर शिकायत करने को कहा. लेकिन राहुल ने कोई हलफनामा नहीं दिया. अब बिहार में उन्होंने कहा कि भाजपा वालों सावधान हो जाए, मेरे पास हाइड्रोजन बम है. अब भाजपा के नेता इस चिंता में हैं कि हाइड्रोजन बम में क्या हो सकता है?